



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अनुभूति

अंक-तृतीय



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान),
1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)-कोलकाता की पत्रिका



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अनुभूति

अंक-तृतीय

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान),

1,कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)-कोलकाता की पत्रिका



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संदेश

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका “अनुभूति” के तीसरे अंक का विमोचन मन को छू जाने वाला एक प्रयास है। हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा के स्तर को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विकास, सभ्यता, संस्कार और संस्कृति से जुड़ी है। एक सुदृढ़ राजभाषा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का कार्य छोटा किंतु उल्लेखनीय कदम इसी प्रतिबद्धता का परिचायक है।

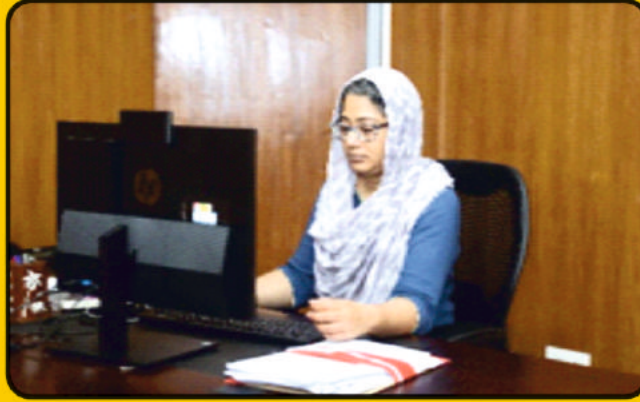
यह पत्रिका कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम है। आशा करती हूं कि यह पत्रिका इंद्रधनुष की तरह अपने रंग बिखरेगी एवं नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगी।

‘अनुभूति’ पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी अशेष शुभकामनाएं।

सुपर्णा देब
महानिदेशक



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संदेश

हिंदी के प्रयोग की बढ़ती व्यापकता तथा हिंदी के बढ़ते अंतरराष्ट्रीय महत्व को देखते हुए पत्रिका का प्रकाशन निःसंदेह अपने आप में एक सार्थक प्रयास है। गृह पत्रिका 'अनुभूति' के प्रकाशन की सबसे महत्वपूर्ण और उपयोगी बात है। यह हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के माध्यम से हमें अपने स्तर पर देश की सेवा करने का अवसर प्राप्त हो रहा है। हिंदी भाषा पूरे देश को एक सूत्र में बांधने का काम करती है एवं 'अनुभूति' पत्रिका का प्रकाशन कर कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने संवैधानिक दायित्व का परिचय दिया है।

मैं पत्रिका से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके इस प्रयास के लिए बधाई देती हूं और पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करती हूं।

तान्या सिंह
निदेशक (प्रशासन)



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संदेश

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'अनुभूति' के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम, समर्पण, लगाव और सम्मान को मूर्त रूप देने का यह अनुपम प्रयास गागर में सागर भरने जैसा है।

विभाग के सदस्यों द्वारा लिखित रचनाओं के जरिए जहां एक ओर सदस्यों की कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता का परिचय मिलता है वहीं यह पत्रिका व्यक्तिगत स्तर के साथ ही सरकारी कामकाज में भी हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग का व्यवहारिक संदेश भी देती है।

पत्रिका प्रकाशन के इस अभियान में अपने परिश्रम, लगन, रचनाधर्मिता और प्रयासों का योगदान देने वाले सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा और बधाई के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूं कि यह पत्रिका अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में अवश्य ही सफलता प्राप्त करेगी।

अजय कुमार
निदेशक (रिपोर्ट)



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संपादकीय

भाषा हमारे विचारों, हमारे आंतरिक अनुभूति को व्यक्त करने का माध्यम है। हमारे देश बहुभाषी है जहां हर प्रांत की अपनी भाषा है और इसके अतिरिक्त भी बहुत सारी स्थानीय भाषाएं हैं। इस बहुभाषिक संस्कृति के बीच ऐसी भाषा जिससे पूरे देश में समझा जाता है तथा जो बहुसंख्यक के विचारों को माध्यम प्रदान करती है, वह हमारी राजभाषा हिंदी है। विविधताओं वाले इस देश में भाषाओं के बीच समरसता और बहुभाषिकता की संस्कृति अनंत काल से ही चली आ रही है। अंग्रेजों ने अपने शासन के दौरान इसी समरसता और बहुभाषिकता की स्वीकृति के प्रति संदेह का बीज बोकर भाषाई वैमनस्यता को बढ़ावा दिया। हिंदी हमारी संस्कृति है। यह केवल भाषा नहीं है। आज भूमंडलीकरण के दौर में जहां वर्चस्वकारी शक्तियों द्वारा एकरूपता स्थापित की जा रही है, वहां अपनी संस्कृति की रक्षा एक ज्वलंत सवाल के रूप में हमारे समाज के समक्ष उपस्थित है। इस भीषण अंधकार में रोशनी की टिमटिमाती लौ के रूप में हिंदी ही हमें दिशा दिखा सकते हैं। बस हमारी कोशिश यह हो कि सूर्य की जाज्वल्यमान शक्ति की तरह हम अपने संस्कार में इसे ढाल लें और भाषा तथा संस्कृति की वैश्विक चुनौती में अपनी इस ढाल के साथ विश्व में अपनी छाप छोड़ें। हिंदी हमारी मातृभूमि है मातृभूमि हमारी हिंदी। इसे संजोना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य होना चाहिए। तभी हम भारत के लिए बेहतर भविष्य और समाज की कल्पना कर सकते हैं।

यह पत्रिका हमारी हिंदी के प्रतिराष्ट्रीय कर्तव्य की भावना को मूर्त रूप में लाने की एक प्रयास भर है जिसमें आपकी रचनात्मक प्रतिक्रियाएँ महती भूमिका निभाती है। आशा है कि इन प्रतिक्रियाओं के रूप में आप सबों का स्नेह और प्यार अनवरत प्राप्त होता रहेगा।

बबन कुमार

वरिष्ठ अनुवादक



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मुख्य संरक्षक

सुपर्णा देव, महानिदेशक लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)

संरक्षक

तान्या सिंह, निदेशक/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)
अजय कुमार, निदेशक/ रिपोर्ट
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)

संपादक मंडल

बबन कुमार, वरिष्ठ अनुवादक, प्रशासन
धीरज कुमार राय, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, प्रशासन

परामर्शदाता मंडल

सुशील तोपनो, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी, प्रशासन
नरेन्द्र कुमार, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी, प्रशासन
नुपुर साव, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, प्रशासन
संजय बोस, सहायक पर्यवेक्षक, रिपोर्ट

प्रकाशक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)
1-काउंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के नीजि विचार हैं। प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा रचनाओं के मौलिकता का दायित्व लेखकों की होगी।)



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	हिंदी- राजभाषा से जनभाषा	बबन कुमार	07
2	संतोष	गोपाल कुमार	09
3	कोरोना वायरस	शांति यादव	10
4	अर्धांगिनी/पत्नी	शांति यादव	11
5	मेरी अनुभूति	शांति यादव	12
6	दीपक बोलता नहीं	पंकज कुमार 1	13
7	शब्द से शब्द	अनुपम दास शर्मा	14
8	बचपन का व्यामोह	अंकित कुमार मल्लिक	15
9	सुप्रभात वंदन	सियाराम कुमार	16
10	सच्ची खूबसूरती	राम कुमार	17
11	लॉकडाउन लागू है	रोहित कुमार	18
12	बाबूजी अब डैड बन गए	रोहित कुमार	19
13	आंखों का गुरु हो मां पापा	प्रिया तिवारी पांडे	20
14	एक रिश्ता ऐसा भी	शशि पांडे	25
15	आदतों के गुलाम	अंजली कुमारी	27
16	धीरज धर मनुआ	स्वाती कुमारी	28
17	जिंदगी	दीनबंधु घोष	29
18	मां	विमल कुमार	30
19	रबड़ कटर	प्रियंका कुमारी	31
20	जब मैं छोटा बच्चा था	हर्षित पटेल	32
21	आरा जिला घर बा, त कवन बात के डर बा	धीरज कुमार रॉय	33
22	श्री कृष्ण की सोलह कलाएं	बबन कुमार	36
23	टोक्यो ओलंपिक: भारत ने इतिहास रचा	संजय कुमार बोस	38
24	चुप क्यों हो ?	कौशल किशोर यादव	39
25	गलतफहमी का शिकार	विमल कुमार	40
26	मैं मोबाइल हूं	कौशल किशोर यादव	41
27	जिंदगी का पड़ाव	नूपुर साव	42
28	पिप्पलाद कथा	नरेन्द्र कुमार	43



हिंदी राजभाषा से जन भाषा

बबन कुमार
वरि. अनुवादक/प्रशा.

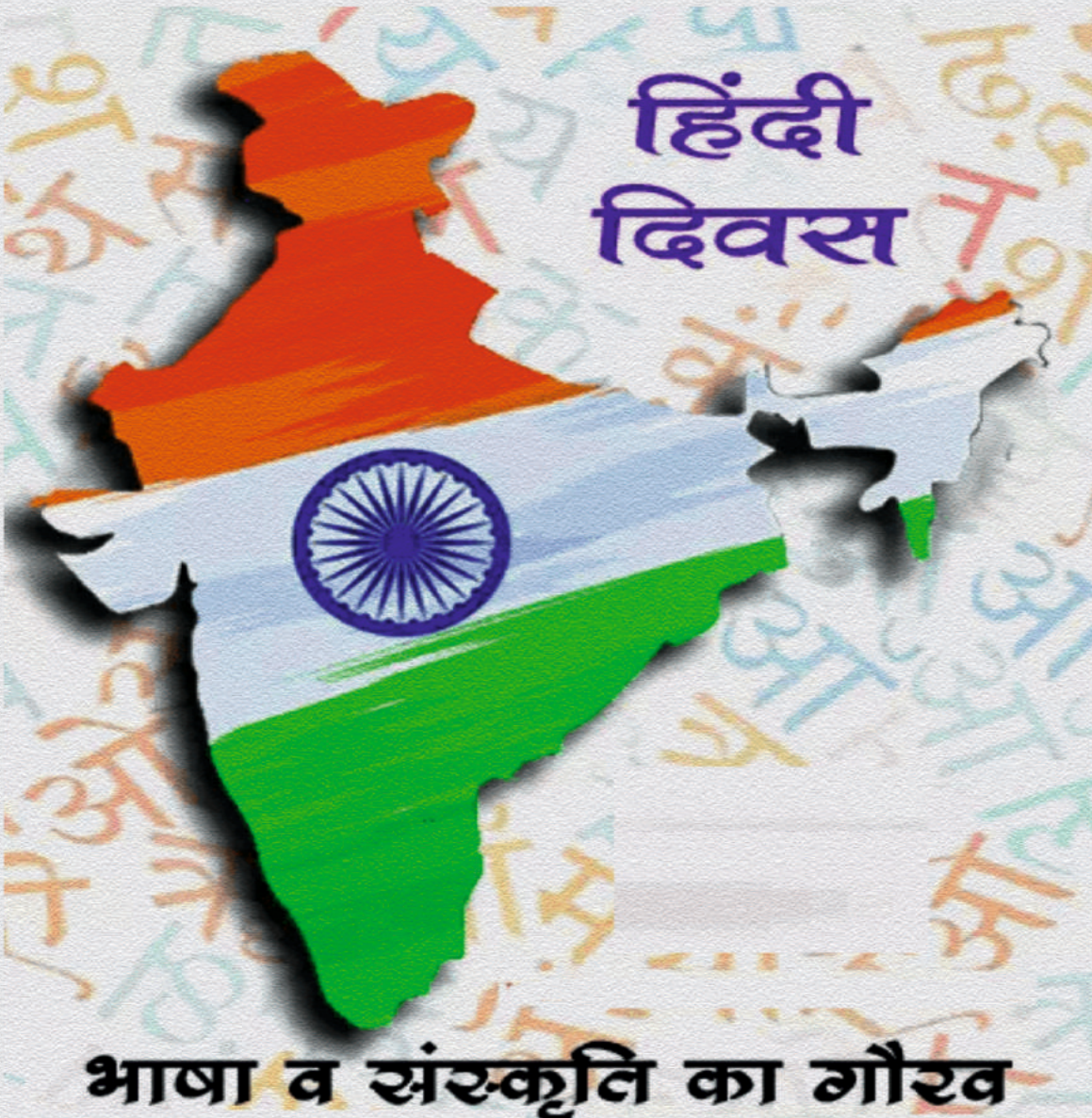
हिंदी एक साथ दो मोर्चों पर लड़ रही है। एक और शिक्षा का मोर्चा है तो दूसरी तरफ बाजार। भारत जैसे देश में जहां शिक्षा से निर्मित होने वाली अर्थव्यवस्था लगातार बढ़ रही है, वहीं बाजार की दृष्टि से भी भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन कर उभर रही है। लेकिन बाजार जहां हिंदी और भारतीय भाषाओं में विस्तार पा रहा है, वहीं शिक्षा में भारतीय भाषाएं सिकुड़ती जा रही हैं। यह कमजोरी पहले केवल उच्च शिक्षा के संस्थानों में थी जहां हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को लगभग निसिद्ध घोषित कर दिया गया था, वहीं अब माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएं उपेक्षित हो रही हैं। सामान्य जन के बदलते दृष्टिकोण के पीछे निश्चित रूप से शासकीय नीतियां एवं समाज के प्रभावशाली वर्ग की भारतीय भाषाओं के प्रति उपेक्षा एवं अंग्रेजी के प्रति अतिशय मोह बड़ा कारण रहा है। आजादी के तत्काल बाद जिस जज्बे के साथ देश ने राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार किया था और यह सपना देखा था कि हिंदी अगले 10 से 20 वर्षों में समस्त भारत की संपर्क भाषा, राजभाषा और उससे आगे बढ़कर राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित होगी वह स्वप्न आज भी अधूरा है। सामान्यतः सिद्धांत यह है कि जो भाषा बाजार में चलती है वही अंततः राज और समाज की भाषा बनती है। लेकिन हिंदी और भारतीय भाषाओं के साथ इसका उल्टा हो रहा है। देश की आर्थिक गतिविधियों के संचालन में विशेषतया खुदरा व्यापार में हिंदी और भारतीय भाषाएं अपरिहार्य हैं, पर समाज के संचालन और राजकाज की भाषा के रूप में इसकी भूमिका अब भी सीमित है।

देश में अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या भारतीय संविधान की आठवीं सूची में शामिल किसी भी भाषा से कम है। बावजूद इसके अभी भी अंग्रेजी पूरे भारत के राजकाज की भाषा बनी हुई है। इसी कारण यह एक वर्चस्व वाली भाषा है। अंग्रेजों की नीतियों के कारण भारतीय भाषाओं के बीच समरसता और बहुभाषिकता की स्वीकृति के प्रति संदेह पैदा हुआ जबकि भारत में भाषा संस्कृति के निर्माण, मनुष्य के बलिदान और स्वाभिमान तथा जीवन का साधन रही है। भारत में भाषा का लोकोत्तर चरित्र है। उसका परंपरागत इतिहास है। उसे ज्ञान के विस्तार और ज्ञान के निर्मित के लिए उपलब्ध साधन के रूप में देख सकते हैं। सभी भारतीय भाषाओं में ऐसी पूरकता है जिससे भारत नाम के सांस्कृतिक राष्ट्र की निर्मिति होती है। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक संपूर्ण राष्ट्र एकता के सूत्र में बंधता है। इसकी विविधताओं को स्वीकार करके राष्ट्रीय एकता सिद्ध होती है। हालांकि संसद की चर्चा का अधिकांश हिस्सा हिंदी और भारतीय भाषाओं में हुआ है, पर अभी भी कार्यपालिका में इनका प्रयोग सापेक्षिक रूप से कम है। न्यायपालिका में तो हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाएं प्रवेश पाने के लिए संघर्ष कर रही हैं। उच्च शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। इस देश के भाषाई कुलीन श्रेष्ठ शिक्षकों एवं शोधवेत्ताओं ने पूरे प्रयास से हिंदी और भारतीय भाषाओं को उच्च शिक्षा एवं शोध की भाषा बनने से रोका है। उनका तर्क यह है कि हमारी भाषा में सामग्री नहीं है। इस नाते हम अंग्रेजी में पढ़ाने के लिए बाध्य हैं।

हम जानते हैं कि स्नातक में आने वाला विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा को कितना समझ पाता है। भाषा सीखते सीखते ही उसकी जिंदगी चली जाती है। हमें ऐसी शिक्षा पद्धति की स्थापना करने का प्रयास करना होगा जिसमें सृजनात्मक कल्पनाएं एवं नई संभावनाओं का चिंतन मनुष्य अपनी मातृभाषा में कर सकें। इसके लिए हमें दुनिया में उपलब्ध ज्ञान विज्ञान के संसाधनों, तकनीकी उपकरणों के संसाधनों, संप्रेषण के माध्यमों का समन्वित प्रयोग करते हुए संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को परिवर्तित करने के लिए प्रयास करना है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की स्वीकृति के एक वर्ष के अंदर ही इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कॉलेजों में भारतीय भाषाओं में अध्यापन प्रारंभ होना एक युगांतकारी घटना है जो सही संदर्भ में मैकाले को खारिज करते हुए भारत के लोगों के लिए भारत की जुबान में शिक्षा हो, इसका पथ प्रदर्शित करती है। शिक्षा के भारतीयकरण का

अभियान भी भारतीय भाषा के माध्यम से ही होगा। इसका सृजनात्मक पक्ष देखने को मिलने लगा है। हिंदी को लेकर जन स्वीकृति का जो स्वरूप बन रहा है, उसे शिक्षा में उतारना होगा। इसके लिए नई शिक्षा नीति में चयन मूलक स्वतंत्रता और आवश्यकता मूलक चयन की दृष्टि से भारतीय भाषाओं को प्रस्तुत किया गया है। भारत की बहुभाषिकता को संबोधित करते हुए हिंदी आने वाले 10 से 15 वर्षों में भारत सहित विश्व स्तर पर ज्ञान विज्ञान और तकनीकी भाषा के रूप में विकसित हो सकती है।

हम दुनिया के तमाम देशों पर नजर दौड़ाएं तो उच्च स्थान पर वही राष्ट्र हैं जिन्होंने शिक्षा, व्यापार और सरकारी कामकाज इन सबके बीच अपनी मातृभाषा को स्वीकारा और बढ़ावा दिया है। हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं को स्वीकार करना, उन्हें शिक्षा, व्यापार और सरकार की भाषा बनाना वास्तव में भारत को औपनिवेशिक दासता से मुक्ति दिलाना है और सही अर्थों में हिंद स्वराज को साकार करना है। समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व का जो स्वप्न भारत के संविधान निर्माताओं ने देखा था, वह इसी तरह पूर्ण होगा।





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संतोष

गोपाल कुमार
डाटा एंट्री ऑपरेटर

जीवन में संतोष मिलने पर जो आनंद मिलता है, वह अनिर्वचनीय है बाद में किसी तरह का विचलन नहीं रहता। किसी तरह की प्रतिस्पर्धा नहीं रहती। महत्वाकांक्षाओं के घोड़ों की लगाम कस जाती है। संतोष ही सुख के सागर का मार्ग प्रशस्त करता है। संतोषी व्यक्ति का मन सदैव स्थिर रहता है। वह हमेशा शांति की खोज में रहता है। संतोष ऐसा खजाना है जिसके सामने अपार वैभव, अथाह धन सब मिट्टी के समान हैं। संतोष का पैमाना संपदा से नहीं है। यह तो मन की वह उदार महान स्थिति है, जिसमें सब अपने से प्रतीत होते हैं। मन में द्वेष का भाव शून्य हो जाता है।

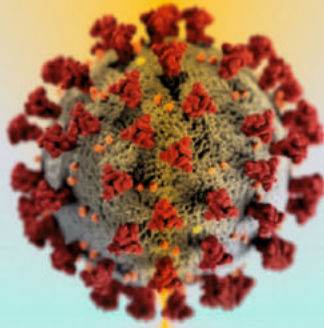
संतोष उनके अधिक समीप होता है जो उदार होते हैं। वृक्ष अपना सर्वस्व परोपकार के लिए समर्पित कर देते हैं। वह परम संतोषी है। नदियां संतोष का पुंज हैं। उनका जल जो समस्त जगत के लिए होता है। संतोष का प्रभाव हमारे पूरे व्यक्तित्व पर पड़ता है। जो संतोषी होते हैं, उनके स्वभाव में चिड़चिड़ापन नहीं होता। हमें संतोषी बनने के लिए उपक्रम करने चाहिए, जिससे जीवन का परम आनंद प्राप्त किया जा सके।



कोरोना वायरस

शांति यादव

मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा पर ताला लग गया।
घूमना फिरना सब बंद हो गया।
इस कोरोना वायरस में बाजार भी बंद करवाएं कुरकुरे और चिप्स की खाली पैकेट,
मुंह में पानी लाए।
चाट समोसा और गुपचुप की याद,
हमें सताए जब से कोरोना वायरस है आए।
ऑनलाइन की पढ़ाई में,
सारे अक्षर नाचे गाए।
मम्मी की फटकार हमें पकाए,
मुंह में मास्क हमें डराए।
इतनी गर्मी में भी आइसक्रीम की
एक भी बूंद हम ना पाएं।
नीली पीली हरी टॉफियां हमें ललचाए।
कैडबरी, डेयरी मिल्क, फ्रूटी और कोकाकोला सपने में आए।
भूल गए हम सारे रिश्तेदारों के चेहरे
दादा जी के घर के झूले हमें बुलाए।
फिर भी हम किसी से मिल ना पाए
जब से कोरोना वायरस है आए।
हाथ धो धो कर थक गए हैं हर घर से डिटॉल की खुशबू आए
फ्रिज की ठंडी ठंडी पानी हमें बुलाए।
पर मम्मी हमें जबरन तुलसी और काढ़ा पिलाए
जब से कोरोना वायरस है आए।
सारे देव डॉक्टर बन गए हैं
और सारी देवियां नर्स
ऐसा कहते मम्मी डैडी
और इस विपदा में शिक्षक भी हमें यही सीखलाए।
अपने घरों को रखो स्वच्छ और खुद भी रहो साफ-सुथरे
तभी भगा पाओगे कोरोना वायरस को जड़ से।।





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



अर्धांगिनी/पत्नी

शांति यादव

अग्नि को साक्षी मानकर, सात वचनों के संग
सात फेरों को लेकर, जीवनसंगिनी बनाया है मुझे तो
हर परिस्थिति में अपनी, संगिनी बना लो ना..
कहते हो तुम्हारी अर्धांगिनी हूं तो
सच में अपना आधा अंग बना लो ना।
अपने मान सम्मान को ताक पर रखकर
पूरे परिवार के आगे पीछे
जो ढलती रहती हूं मैं
जहां प्यार कम और अपमान ज्यादा है
जहां बाहरी हूं मैं।



यह कह कर हर बातों से मरहूम किया जाता है
मेरे हाथ को थाम कर, इस घर का आंगन हूं मैं।
इस सूने मन में यह एहसास दिला दो ना
तुमसे बात करने के लिए मुझे किसी तीसरे इंसान की जरूरत नहीं
यह बात समझा दो ना।

इन सारी बातों में उलझ कर हंसना भूल गई हूं मैं
फिर से एक छोटी छोटी बातों पर हंसना मुझे सिखा दो ना।
जब थोड़ी सी सम्मान पाने की बारी आती है मेरी
तो एक अंधेरे कोने में खड़ा कर दिया जाता है मुझे
मेरा हाथ थाम कर मुझे अंधेरे से उजाले की तरफ ले आओ ना।

जब दफ्तर से लौट कर घर आते हो तुम
और एक छोटे से बच्चे की तरह तुम्हारा इंतजार करते हुए
दरवाजे पर जो मिलती हूं तो मुझको भी गले से लगा लो ना।

जो बीमार पड़ती हूं मैं, तो सब कहते हैं कि
काम करने के डर से यह नया कोई बहाना है

इन सब बातों को दरकिनार करके वह प्यार भरा हाथ मेरे सर पर भी रख दो ना।
बहुत थक गई हूं मैं बेटी, से बहू, पत्नी मां और बहन की जिम्मेदारियां निभाते निभाते
गलत ना होते हुए भी परीक्षाओं को देते-देते
अपनी गोद में सर रखकर मेरा चैन की नींद मुझे सुला दो ना।

कहते हो अर्धांगिनी हूं तुम्हारी तो
सच में अपना आधा अंग बना लो ना।



मेरी अनुभूति



शांति यादव

एक लड़की को कितना मुश्किल होता है शादी के बाद नए परिवार में सामंजस्य बैठाना। नए लोग, नया माहौल, नया परिवार सब कुछ अलग और उसके हिसाब से खुद को ढालना सबका विश्वास पाना। शैली इन्हीं सब बातों में उलझी हुई थी वह दिन भी क्या दिन थे जब आदित्य से विवाह उपरांत शैली घर में गृहलक्ष्मी बन कर आई थी। सब कुछ कितना अच्छा था जैसे-जैसे समय बीतता गया इस भागदौड़ की जिंदगी में सब कुछ बदल गया। बात 2018 की है जब शैली दुर्गा पूजा में अपने पति के साथ कानपुर आई थी अपने ससुराल। वहां सास ससुर भगिनी भागना सभी लोग थे, उसे याद आ रहा था कि दो बच्चों के साथ ट्रेन का सफर इलाहाबाद से कानपुर तक काफी थका देने वाला था और थकावट की वजह से उसे वायरल फीवर हो गया था। सबके लिए कपड़ों की खरीदारी हो चुकी थी बस बड़े भांजे के लिए कपड़ा लेना बाकी था। बुखार और थकान की वजह से उसे काफी कमजोरी हो गई थी फिर भी वह उठती काम करती फिर बिस्तर पर जाकर सो जाती। उसे अपनी मां की बहुत याद आ रही थी। ससुराल में उससे कोई भी यह पूछने वाला नहीं था कि शैली तुम कैसी हो? किसी भी बहू पर विश्वास करना बड़ा मुश्किल होता है। इसलिए बगल की नारायण आंटी को बुलाया गया था पूछताछ के लिए। आते ही उन्होंने शैली से पूछा “शैली सुना है तुम्हारी तबीयत खराब है। क्या हुआ है?” शैली ने कहा “बुखार है और थोड़ी कमजोरी लग रही है।” मुझसे पूछा दवा ली कि नहीं। मैंने हौले से जवाब दिया ‘नहीं’। फिर उन्होंने कहा ‘लेना चाहिए ना दवाई ले लो ना’ और कह कर चली गई।

अनुज उस समय कुछ काम की वजह से बाहर गए हुए थे। जब वह घर लौटे तो देखा शैली बिस्तर पर पड़ी हुई थी। क्या बात है शैली कहते हुए अनुज ने शैली के माथे पर हाथ रखा। अनुज का प्रेम स्पर्श पाकर शैली को मां की याद आ गई। ऐसा लगा जैसे किसी ने तपते रेगिस्तान में पानी की कुछ बूंदें गिरा दी हो। कितना सुखद अहसास था शैली के लिए जिसे शब्दों में व्यक्त कर पाना उसके लिए मुश्किल था। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने अविश्वास पर विश्वास की चादर ओढ़ा दी हो। अनुज गुस्से से शैली को डांट रहे थे पर शैली को उनकी दांत के पीछे छिपे हुए प्यार ने आत्म विभोर कर दिया था। अपने प्रति उनके सम्मान को देखकर शैली कुछ कह नहीं पा रही थी और अनुज गुस्से में बड़बड़ा रहे थे। “कितना भी कह दो पर काम रुकता ही नहीं तुम्हारा। जाओ-जाओ किचन में कुछ बर्तन और पड़े होंगे उसे भी धो दो।”

“यह अनुभूति यह एहसास कितना प्यारा है और मैं कितनी खुशनसीब हूं कि मुझे अनु जी जैसी इतना प्यार करने वाला इंसान पति के रूप में मिला।” यह सोच वह मंद मंद मुस्कुरा रही थी। इस बात को कितने वर्ष बीत चुके हैं फिर भी शैली के लिए यह उसके जीवन का सबसे खूबसूरत पल है। यही अनुभूति उसके जीवन का सबसे अनमोल उपहार है।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दीपक बोलता नहीं

पंकज कुमार 1
(समन्वय)

दीपक बोलता नहीं। उसका प्रकाश ही उसका परिचय देता है
इसी तरह अपने बारे में कुछ ना कहें। बस अच्छे कर्म करते रहें वही आपका परिचय देंगे

अच्छा सोचिए, अच्छा बोलिए और अच्छा कीजिए
क्योंकि सब आपके पास लौटकर आता है।

सुंदरता की कमी को
अच्छा स्वभाव पूरा कर सकता है।
लेकिन स्वभाव की कमी को
सुंदरता से भी पूरा नहीं किया जा सकता।

मौन सबसे अच्छा उत्तर है
किसी ऐसे व्यक्ति के लिए
जो आपके शब्दों को महत्व नहीं देता।।



शब्द से शब्द

अनुपम दास शर्मा
(समन्वय)

कितनी भी देर
शब्दों के पीछे बसी
मजबूत चुप्पी
किसे दोष दें? मैं नहीं कहा-
एडु बादल के गर्भ में एक पूरा टुकड़ा
चांद डूब जाता है
प्रारंभिक पागलपन में समृद्धि की भावना थी
खरपतवार में खरपतवार सही समय पर उगते हैं
मैंने गुप्त ज्ञान नहीं सीखा, इसलिए मैं वापस नहीं आया
गोधूलि आभूषण आकाश में उतरते हैं
अधिक लेखन करीब आ गया
अधिक सहज खोज खोने के लिए कुछ नहीं..



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



बचपन का व्यामोह

अंकित कुमार मल्लिक

वह घर ही क्या, जहां कोई बचपन ना खेला हो
जहां कभी अपनों का ना लगता मेला हो।
टूटते हैं खिलौने, रूठते हैं मासूम
हंसने मनाने का चलता सिलसिला हो।
कभी चाय की खुशबू हो
कभी गुलाब जामुन की मिठास
नूडल्स को हाथों में लेकर
खाने खिलाने का मजा हो।
त्योहारों की चमक हो
रंगों की धमक हो
जहां कोई ना रहता अकेला हो।
मिलकर दीए जलाओ खुशियों के
गुजिया के मिठास से सबका दिल भरा हुआ
वह घर ही क्या जहां कोई बचपन ना खेला हो।





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुप्रभात वंदन

सियाराम कुमार

पहला सुख निरोगी काया ।
दूजा सुख घर में हो माया ।
तीजा सुख कुलवंती नारी ।
चौथा सुख पुत्र हो आज्ञाकारी ।
पंचम सुख स्वदेश मे वासा ।
छठवां सुख राज हो पासा ।
सातवा सुख संतोषी जीवन ।
ऐसा हो तो धन्य हो जीवन ।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



सच्ची खूबसूरती

राम कुमार

रूप में क्या रखा है
रंग में क्या रखा है
क्या फर्क है जो कोयल है काली
कूक तो इसी की प्यारी लगती है।

शक्ल में क्या रखा है
सूरत में क्या रखा है
क्या फर्क है जो हो पूनम की रात सुंदर
दिवाली तो अमावस्या की प्यारी लगती है।

नैन में क्या रखा है
नक्स में क्या रखा है
क्या फर्क है जो हो कोई सुंदर जैसे अपिता की मूरत
खूबसूरती हो सीरत की, तभी प्यारी लगती है।





लॉकडाउन लागू है

रोहित कुमार

लॉकडाउन चालू है
क्योंकि कोरोनावायरस दयालु है।
बरसा दे आप पर प्रेम अपार
और आप जाओगे स्वर्ग सिधार।

सिधार गए जहां में अनेक
कोरोना कर रहा है सैलिब्रेट।
अतः आप भी ना बनो उसका टेस्ट
हो सके जितना, घर पर करें रेस्ट।

रेस्ट करते हुए सरकार की माने बात
नहीं देखेगा कोरोना कौन सी आपकी जात।
बस चिपक जाएगा आप से
छूटने से ना छूटेगा किसी जाप से





लोकहितार्थं सत्यमेवया
Dedicated to Truth in Public Interest



बाबूजी अब डैड बन गए

रोहित कुमार

बाबूजी अब डैड बन गए
बेटा अब ग्रेजुएट बन गया
हमारा इंडिया गेट बन गया।

इमली की चटनी सॉस बन गई
बीबी घर की बॉस बन गई
हर रिश्ता अब ट्रेंड बन गया
हमारा इंडिया गेट बन गया।

हिंदी अब गुमशुदा हो गई
संस्कृत पुस्तक से जुदा हो गए
इंग्लिश कॉमन सब्जेक्ट बन गया
हमारा इंडिया गेट बन गया।

सन्यासी और ढोंगी हो गए हैं
नेता कुर्सी के रोगी हो गए हैं
बस्ता टेबलेट बन गया
हमारा इंडिया गेट बन गया।

लता जी गुमनाम हो गई
मुन्नी भी बदनाम हो गई
भारत रत्न ऑब्जेक्ट बन गया
हमारा इंडिया गेट बन गया।

dreamstime



आंखों का गुरुर हो मां पापा

प्रिया तिवारी पांडे

बचपन का दौर भी गजब का था ना पापा, ना रास्तों की चिंता ना मंजिल का डर, बस सब कुछ आप थे पापा।

बारिश के मौसम में जब सड़कों पर तेज लहरें बहती थी, तब आपका हाथ पकड़कर जल की धाराओं को पार करने में, बड़ा मजा आता था पापा।

आज बारिश भी होती है, लहरें भी बहती है, पर उन नादानी भरे खेलों की यादें ही रह गई है पापा।

जब भी गलती करती थी मां की डांट से, आप मुझे बचा लेते थे ना पापा,

और कहाँ करता है मुझ पर नाज कोई,

एक बस आपकी आंखों का तारा हूं मैं पापा।

याद नहीं कि कभी कुछ मांगा हो मैंने आपसे, आपने तो मेरी हर जरूरत हर शौक को, मेरे जानने से पहले ही पूरा किया है पापा।

काश! मैं किसी तरह उन खुशियों को वापस ला पाती, फिर से आपकी उंगली थाम कर आपकी नजरों से दुनिया देख पाती पापा।

बढ़ती उम्र की जंजीरों ने भले ही आपके दिमाग को जकड़ रखा है पर मैं जानती हूं दिल से आज भी आपके आंखों का गुरुर हूं मैं पापा.....



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय में मनोरंजन क्लब के शुभ अवसर की झलकियाँ





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय में मनोरंजन क्लब के शुभ अवसर की झलकियाँ





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय में मनोरंजन क्लब के शुभ अवसर की झलकियाँ





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय में मनोरंजन क्लब के शुभ अवसर की झलकियाँ





एक रिश्ता ऐसा भी

प्रिया तिवारी पांडे

रक्षाबंधन आने वाला था। इसलिए मेघा घर की साफ सफाई में बिजी थी। दूसरी तरफ प्रणव लैपटॉप पर ऑफिस का काम कर रहा था। अचानक लाइब्रेरी रूम के कोने में पड़ी पुरानी अलमारी पर मेघा की नजर पड़ी। उसे साफ करते वक्त मेघा को प्रणव के बचपन की कुछ किताबें दिखीं। मेघा ने कुछ सोचकर प्रणव से पूछा 'यह किताबें तो काफी पुरानी हो चुकी हैं। क्यों ना इन किताबों को रद्दी वाले को बेच दिया जाए।' यह सुनकर प्रणव भागता हुआ लाइब्रेरी रूम में घुसा और मेघा के हाथों से उन किताबों को लेते हुए बोला - 'बिल्कुल नहीं मेघा! यह किताबें मेरे दिल के बहुत करीब हैं। आज मैं जो कुछ भी हूँ, इन्हीं की वजह से हूँ। यह किताबें मेरी मालकिन की हैं।

'मेघा- 'मतलब, मैं कुछ समझी नहीं? '

मेघा की जिज्ञासा को शांत करते हुए प्रणव बोला - 'तुम तो जानती हो मेघा, मेरा बचपन बहुत गरीबी में गुजरा है। मेरी मां ने लोगों के घर में काम करके मेरी परवरिश की है। पर मां के साथ साथ कोई और भी है जिसकी वजह से मैं यहां तक पहुंचा हूँ। उसका नाम अनु है। 'प्रणव- 'मेरी मां अनु के यहां काम करती थी। अनु के पापा पुलिस कमिश्नर के पद पर कार्यरत थे। उस वक्त मैं पाँच साल का था और अनु सात साल की। मां के साथ मैं भी हर रोज अनु के घर जाता था। अनु और मैं साथ खेलते थे। उसके पास ढेर सारे खिलौने और किताबें थीं। जब वह पढ़ती थी, मैं उसकी किताबों को निहारता रहता था। एक दिन उसने अपनी हालत के बारे में प्रणव को कुछ ना बताने का निर्णय किया। पर अचानक वह शक्स जो उसकी देखभाल कर रहा था। उसने प्रणव को विजय के बारे में सब कुछ बता दिया और यह भी बताया कि आर्थिक तंगी के कारण विजय का इलाज किसी बड़े अस्पताल में नहीं हो पा रहा है। प्रणव को यह सब जानकर बहुत दुख हुआ और उसने तुरंत ही गाड़ी बुलवाया और विजय को दिल्ली के सबसे बड़े अस्पताल 'दिल्ली एम्स' में भर्ती कराया। प्रणव ने विजय के इलाज की पूरी जिम्मेदारी ले ली थी। वह सब कुछ छोड़कर बस किसी भी तरह विजय को स्वस्थ देखना चाहता था। विजय की हालत भी धीरे-धीरे सुधर रही थी। इधर अनु जब वापस अपने घर आई तब उस शक्स ने अनु को बतलाया कि किस तरह प्रणव बाबू, विजय बाबू को अपने साथ ले गए हैं। अनु काफी परेशान हुई पर इंतजार करने के अलावा उसके पास और कोई चारा नहीं था क्योंकि ना ही प्रणव का फोन नंबर उसके पास था और ना उसका पता। था तो सिर्फ प्रणव के पति उसका अटूट विश्वास। लगभग एक महीने बाद, राखी के दिन प्रणव विजय को साथ लेकर अनु के घर पहुंचता है। इस बार प्रणव के साथ उसकी पत्नी मेघा भी थी। विजय अब बिल्कुल स्वस्थ हो चुका था। अनु को जब विजय के स्वस्थ हो जाने का पता चला उसकी आंखों से आंसुओं की बारिश होने लगी। अनु ने कहा - 'प्रणव तुम्हारा यह एहसान मैं कभी नहीं चुका पाऊंगी।' तभी मेघा बोल पड़ी - 'नहीं अनु सात साल की छोटी सी उम्र में तुमने जो किया था उसके सामने तो यह कुछ भी नहीं।'

अब तो दोनों ने काफी देर तक बातचीत की। बातों बातों में अनु ने बताया कि वह इस शहर में नई है। उसने अपने घर का पता बतलाया जहां वह अपने पति और दो बच्चों के साथ रहती है और प्रणव को अपने घर आने को कहा। अब तो प्रणव अक्सर अनु से मिलने जाया करता था। वह जब भी जाता अनु के बच्चों के लिए ढेर सारे चॉकलेट और मिठाइयां ले जाता। बच्चे भी उसके साथ घुलमिल गए थे। पर प्रणव का बार-बार अनु के घर आना और उन दोनों का एक दूसरे से इतना घुल मिलकर बात करना अनु के पति (विजय) को खटकने लगा। बीमारी के कारण विजय बहुत लाचार हो गया था और कोई काम नहीं कर पाता था। इस कारण अनु की आर्थिक हालत अब पहले जैसी नहीं थी। वह छोटा मोटा काम करके किसी तरह अपना घर चला रही थी। अपनी आर्थिक हालत और विजय के बारे में अनु ने प्रणव को कभी भी कुछ भी नहीं

बताया। वह पहले की तरह ही प्रणव का आदर सम्मान करती थी। एक बार अनु पैसों का इंतजाम करने के लिए बच्चों साथ अपने मायके गई हुई थी। विजय की देखभाल करने के लिए एक शख्स को उसके पास रख कर गई थी। प्रणव को इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी और वह हमेशा की तरह अनु से मिलने उसके घर आता है। उसे पता चलता है कि अनु मायके गई हुई है। अनु के पति की तबीयत ज्यादा खराब देकर वह उससे पूछ बैठता है - 'आप ठीक तो है, क्या हुआ है आपको।' विजय प्रणव से दिल ही दिल में बहुत नफरत करता था। अपनी अवस्था और लाचारी पर उसे शर्मिंदगी महसूस होती थी। प्रणव बहुत स्मार्ट और हैंडसम था। प्रणव के सामने विजय अपने आप को छोटा महसूस करने लगा। विजय ने अपनी स्लेट - पेंसिल देते हुए कुछ भी लिखने को कहा। मैंने उसे बताया कि मुझे पढ़ना - लिखना नहीं आता। यह जानकर वह सहसा बोल पड़ी - 'आज से मैं तुम्हें पढ़ाऊंगी।' और इस तरह वह रोज मुझे पढ़ना सिखाती। पढ़ाई में मेरी रुचि देखकर उसे बहुत खुशी होती थी। उसने मुझे अपनी कई कॉपी - किताबें दी। कुछ दिनों बाद उसके पापा का तबादला किसी और शहर में हो गया। और वह लोग वहां से चले गए। तब से आज तक यह किताबें अनु की यादों के तौर पर मेरे पास रह गई हैं। कुछ साल बाद हम भी उस शहर को छोड़कर दिल्ली आ गए। कुछ रुक कर प्रणव बोला - 'ऐसा लगता है, मानो अनु के रूप में मां सरस्वती मेरे जीवन में आई और मुझे विद्या का महत्व समझा कर चली गई।' यह सब सुनकर मेघा की आंखें नम हो गई और उसने कहा - 'काश! मैं भी उस देवी के दर्शन कर पाती।' एक दिन सुबह - सुबह प्रणव घर के सामने वाले दुकान में कुछ सामान खरीद रहा था। उस वक्त उसकी नजर एक औरत पर पड़ी जो पास में लगे नल से पानी भर रही थी। उस औरत को देखकर प्रणव को कुछ अजीब सा लगा और अचानक उसके मुंह से निकल पड़ा - 'अनु।' उस औरत ने चकित होकर प्रणव को देखा और कहा - 'हां! मैं अनु हूं। पर तुम कौन हो और मेरा नाम कैसे जानते हो।' शायद वह अनु ही थी और प्रणव ने अनु को पहचान लिया था। वह खुशी से सब कुछ छोड़कर अनु के पास आया और बोला - 'मैं प्रणव। मेरी मां तुम्हारे यहां काम किया करती थी। हम दोनों साथ - साथ पढ़ते और खेलते थे।' अनु - 'अरे प्रणव तुम! तुम काफी बदल गए हो। मैंने तो तुम्हें पहचाना ही नहीं तभी प्रणव ने कहा - 'अनु! तुम खुद इतना कुछ सही। पर मुझे कुछ नहीं बताया। पर अब मैं सब कुछ ठीक कर दूंगा। अब जल्दी से राखी के इस शुभ अवसर पर मुझे राखी बांधो और मेरा मुंह मीठा करवाओ।' प्रणव की यह बातें सुनकर अनु खुशी से झूम उठी और प्रणव को राखी बांधते हुए कहती है - 'तुम मेरे लिए भाई से बढ़कर हो। तुमने मुझे मेरी जिंदगी का सबसे अनमोल तोहफा दिया है।' यह सब सुनकर सभी की आंखें एक बार फिर नम हो जाती है। पास बैठा विजय यह सब देख कर खुद को कोस रहा था कि अनु और प्रणव के रिश्ते पर शक करते हुए ना जाने कितनी ही बार उसने अनु को अपशब्द कहे थे, पर अनु ने कभी पलट कर जवाब नहीं दिया। जिस प्रणव से वह इतना नफरत करता था कि उसे देखना भी नहीं चाहता था, उसी प्रणव की वजह से आज वह पूरी तरह स्वस्थ हो पाया है। कभी - कभी कुछ रिश्ते खून के रिश्ते से भी बढ़कर होते।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



आदतों के गुलाम

अंजलि कुमारी

सुपुत्री श्री तुलसी प्रसाद क्रॉच
ले.प./डी.वी.सी.

कहते हैं कि गुलामी का जमाना चला गया है। एक समय था जब मनुष्य को गुलाम बनाकर बेचा जाता था। फिर एक वही भी समय आया जब एक देश ने दूसरे देश को गुलाम बनाया। अब वह जमाना भी नहीं रहा परन्तु हम यह भी नहीं कह सकते कि गुलामी का अध्याय समाप्त हो गया है। सच तो यह है कि गुलामी बड़ी ही है, हाँ, उसका रूपांतर अवश्य हुआ है। इस संसार में पहला श्वास लेने के समय से लेकर आखरी श्वास लेने के समय तक, हमारे विचार में तो गुलामी की बेड़ियाँ हाथों और पाँवों को ही नहीं, आत्मा को भी जकड़े हुए हैं। जन्म से ही मनुष्य अपने पूर्व कर्मों और संस्कारों की बेड़ियाँ पहने हुए होता है और जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे वह आदतों का भी गुलाम बनता जाता है कि उसकी मानसिकता ही गुलामी की हो जाती है।

आज कोई व्यक्ति सिगरेट पीता है तो उस आदत का वह इतना गुलाम हो चुका है कि सवा पाँच फुट का आदमी होकर भी सवा चार इंच की सिगरेट की गुलामी सो छुटकरा नहीं पा सकता। सर्वशक्तिमान परमात्मा का पुत्र होकर भी वह अपनी इस आदत और दुव्यसन की पुरानी सड़ी हुई रस्सी को नहीं तोड़ सकता। इन्सान होकर भी वह जानवर की तरह एक नहीं, कई खूंटों से बांध हुआ है। सिगरेट के कश लगाकर अपनी नाक और साँस की नली को बिरला मिल की धुँए की चिमनी बनाने में उसको कोई एतराज नहीं। फेफड़े जलें पर इस मनचले का मन अपनी चाल चले इस विधि वह अपना सब कुछ लुटाने को तैयार रहता है। दूसरा कोई व्यक्ति अपनी नॉक-झोंक और टोका-टाकी की आदत से नहीं छूट सकता। उसकी वाणी ऐसी अश्रु गैस का काम करती है कि घर में लोगों के अश्रु टपकने लग पड़ते हैं। वह ऐसे क्लोरोफार्म का काम करती है कि लोग मूर्च्छित हो जाते हैं, काम छोड़ कर बैठ जाते हैं और हर दिन रसोई में आग जलें, अनबन की आग जलाकर वे अपनी बातों की सड़ी खिचड़ी बनाया करते हैं।

अब परमात्मा का अवतरण हुआ है। अब पुरानी आदतों को छोड़ने की बेला आई है। ये सब आदतें हमें उसके वरदानों से वंचित किए हुए हैं। कमाल है कि हम इन बेड़ियों को छोड़ना नहीं चाहते और जिसे हम जन्म जन्मान्तर पुकारते थे, उसके पास पहुँचने के लिए इन आदतों की छोटी-छोटी-सी कुर्बानी भी नहीं कर सकते। शायद हम इन आदतों की गुलामी को गुलामी नहीं समझते, शायद हम इन बेड़ियों और हथकड़ियों को सजावाटी पाजेब और सोने की चुड़ियाँ समझते हैं।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



धीरज धर मनुआ

स्वाती कुमारी
सुपुत्री तुलसी प्रसाद क्रौंच
लेखापरीक्षक/डीभीसी

मनुष्य जब कोई काम करता है तो इच्छा रखता है कि इसका जल्दी ही फल निकल आये। यदि फल निकलने में थोड़ा देर हो जाये या कुछ बाधाएं आए तो वह बर्दाश्त नहीं कर सकता। धैर्य की कमी के कारण ऐसा होता है। मान लीजिये, एक व्यक्ति ने एक लेख लिखना शुरू किया। अभी उसका अभ्यास परिपक्व नहीं हुआ, लेख में वे खूबियाँ ही नहीं आई जो होनी चाहिए। समाचार पत्र के सम्पादक ने उस व्यक्ति का लेख प्रकाशित नहीं किया। धीरज न होने के कारण वह व्यक्ति जो कि लेख के प्रकाशित होने को आशा लगाए बैठा है, इसको सहन नहीं कर सकता और कहने लगता है, 'अजी, संसार में अन्धेरा है। मैंने इतना अच्छा लेख लिखा था, किसी ने छापा ही नहीं। छोड़िये, मैं भविष्य में कभी लिखूंगा ही नहीं।' इस प्रकार धैर्य को छोड़ देने से उसमें एक अच्छी कला का विकास रुक जाता है। एक माता का बच्चा स्कूल गया था परन्तु वापस आने में किसी कारण से देर हो गया। स्कूल में मास्टर जी ने 'थोड़ा अधिक देर तक रोक लिया था क्योंकि परीक्षा निकट होने के कारण विद्यार्थियों को एक दो आवश्यक बातें बतानी थी।' अब माता जी को चिन्ता लग जाती है। थोड़ी देर के बाद वह रोने लग जाती है और आँसू बहाते हुए पड़ोसियों से कहती है कि आज मुन्ना अभी तक नहीं आया। धैर्य खो बैठने से उसमें यह हिम्मत ही नहीं रहती कि वह स्कूल जाकर पता ही कर ले बल्कि रोने के कारण उसके हाथ - पाँव फूल जाते हैं और बुद्धि काम नहीं करती। आते समय में मनुष्य जब धैर्य खो देता है तब उसकी निर्णय शक्ति काम नहीं करती बल्कि जल्दबाजी में वह नई - नई उलझनें पैदा कर देता है। उसकी स्थिति डोल जाती है। झगड़ा मिटने की बजाय बढ़ जाता है और समस्या सुलझने की बजाय अधिक विकट हो जाती है। अतः मनुष्य को चाहिए कि धैर्य धारण करे। शीघ्र ही सुख के दिन आयेंगे यह संसार परिवर्तनशील है, कभी भी एक जैसा नहीं रहता, आज कोई आपदा आई तो कल नहीं तो परसों वह टल जायेगी क्योंकि इस संसार में सदा स्थाई चीज़ कोई नहीं है। केवल धीरज धरने की ज़रूरत है। आज कोई व्यक्ति अत्याचार करता है तो कल उसके मन में दया आयेगी क्योंकि हमारी इच्छा एक दिन उस पर प्रकट अवश्य होगी। परन्तु आज उसे सहन करने तथा कल तक धैर्य करने की ज़रूरत है और सहन करते समय भी हर्षितमुख होने की ज़रूरत है।

धैर्य



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

जिंदगी

दीनबंधु घोष

आहिस्ता चल जिंदगी,
अभी कई कर्ज चुकाना बाकी है
कुछ दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है
रफ्तार में तेरे चलने से
कुछ रूठ गए कुछ छूट गए
रूठों को मनाना बाकी है
रोतों को हँसाना बाकी है
कुछ रिश्ते बनकर, टूट गए
कुछ जुड़ते -जुड़ते छूट गए
उन टूटे -छूटे रिश्तों के
जख्मों को मिटाना बाकी है
कुछ हसरतें अभी अधूरी हैं
कुछ काम भी और जरूरी हैं
जीवन की उलझ पहेली को
पूरा सुलझाना बाकी है
जब साँसों को थम जाना है
फिर क्या खोना, क्या पाना है



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



मां

विमल कुमार

सफर बिल्कुल भी आसान नहीं था
नौ महीने तक अपनी कोख में तुम्हें
महसूस करना
और उसके बाद
तुम्हें पालना संवारना
संभालना निखारना
और अपनी जिंदगी खुद जी सको
इतना काबिल बनाना
मुश्किलों से भरा पड़ा था यह सफर
अगर हार मान लेती
अपना हौसला छोड़ देती
ना तो तुम्हारी अच्छी परवरिश हो पाती
और ना ही इस सफर का मैं हिस्सा बन पाती
कितना कुछ सीखने को मिला मुझे
मैं वह सीख नहीं पाती
अगर इस सफर का हिस्सा ना होती
तो मैं कितना कुछ मिस कर जाती



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



रबड़ कटर

प्रियंका कुमारी
कमलेश कुमार

फेंक रहा है तू इतना रबर कटर
कभी ना दूंगी मैं तुमको बटर
तुमको करके घर से बाहर
कर दूंगी बंद घर के शटर
करता रहेगा खटर खटर
नहीं खुलेगा घर का शटर
खींचकर तुम जाओगे
आंटी और दादी के पास
बोलोगे तुम फटर फटर
मम्मी नहीं खोल रही है शटर
आंटी और दादी जी आई
उन्होंने भी किया खटर खटर
झटर-पटर में खोली शटर
फिर मैं बोली, फेंक फेंक के रबर कटर
हम से मांग रहा था रबर और कटर





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

जब मैं छोटा बच्चा था

हरषित पटेल
कमलेश कुमार

जब मैं छोटा बच्चा था

मुंह में उंगली खूब लगाता था

पापा ने मुझको समझाया बड़े प्रेम से था बतलाया

उंगली लगाना अधिक खराब

हो जाएंगे पेट खराब





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



आरा जिला घर बा, त कवन बात के डर बा धीरज कुमार राय

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)

काउंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता 700001

इसे आमतौर पर इस तरह कहा जा सकता है कि अगर आप आरा से हैं तो आपको किसी बात का भय नहीं होना चाहिए। संक्षेप में कहें तो इस मशहूर कहावत का अर्थ है निर्भीक बनो। हालांकि मेरा जन्म आरा में नहीं हुआ है लेकिन मेरी जड़े आरा बिहार में हैं। और यही कहावत है जिसे सुनते हुए आरा के बारे में मैंने अपनी समझ बनाई है की निर्भीक बनो।

आरा जाने का विचार अचानक ही बना था। चलिए शुरू करते हैं आरा का यात्रा वृत्तांत। ये स्थान बिहार में भोजपुर जिला से भी प्रसिद्ध है। मेरी यात्रा छोटी ही थी। चूंकि बचपन से ही गांव जाना बहुत कम रहा है, इसलिए इस बार आरा और गांव घूमने का उत्साह बहुत ज्यादा था। घटना दो वर्ष पूर्व की है। यात्रा की शुरुवात मैंने सुबह पांच बजे पटना से आरम्भ की थी। मुझे अपने एक रिश्तेदार की शादी में शिरकत करना था।

यात्रा के दौरान सर्वप्रथम जिस स्थान ने मुझे प्रभावित किया वह था कोइलवर पुल। इसका भी अपना एक वैभवशाली इतिहास है। लोहे के गाटर से बने इस दोहरे एवं दो मंजिला पुल की निर्माण, तकनीक व सुन्दरता लोगों को आज भी काफी आकर्षित करती है। 1862 ई. में यह पुल तैयार हो गया था। मजेदार बात जो वहां के लोगो से पता चली वह ये कि पुल 1982 की गाँधी (फिल्म) में दिखाया गया है, जिसे रिचर्ड एटनबरो द्वारा निर्देशित किया गया है। मैंने ये फिल्म देखी है, और वाकई मैं मुझे फिल्म का वो दृश्य याद आ गया। दूसरी मजेदार बात ये है की अक्सर इस पुल पर जाम की स्थिति बनी रहती है। शादी-विवाह के मौसम में दूल्हों की दर्जनों गाड़ियां जाम में फंसी रहती है। कोइलवर पुल पर जाम-महाजाम, जन्म-जन्मान्तर का साथ बनाने वाले विवाह महोत्सव में हमेशा की तरह लगन में बाधक रहा है। दूल्हे राजा व बरातियों के वाहन यहां प्रायः जाम में फंस जाने से विवाह के शुभ मुहूर्त निकल जाते रहे हैं। कोइलवर पुल पर ऐसा नजारा अक्सर दिख जाता है। सोन नदी पर अवस्थित कोइलवर पुल विकास की जीवन रेखा का एक मुख्य बिन्दु है। यातायात की सुविधा विकास की कुंजी मानी जाती है। यह पुल रोड एवं रेल यातायात का न सिर्फ इस क्षेत्र के लिए मुख्य साधन है बल्कि राज्य की राजधानी पटना को राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली से सीधा जोड़ता है।

मेरा सफर कोइलवर से आगे बढ़ता है। मैं आरा पहुँचता हूँ। यहाँ की एक बहुत प्रसिद्ध मिठाई है खुरमा। आरा में गोला पर एक जगह है जहां आपको खुरमा की चार-पांच दुकानें दिख जाएंगी। यहां से गुजरने पर आपको बड़े-बड़े परात में सजे खुरमा की खुशबू व मिठास अपनी ओर एक बार जरूर खींच लेगी। क्योंकि जो एक बार मीठे और रसीले खुरमा का स्वाद चख ले वो इसका मुरीद बन जाता है। खुरमा मिठाई के मिठास की लोकप्रियता का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि बिहार की पारंपरिक मिठाई खुरमा विदेशियों को भी खूब भाती है। आपको बता दें कि, केवल छेना और चीनी से बनने वाली ये मिठाई शाहाबाद क्षेत्र के भोजपुर, रोहतास और बक्सर जिले अलावे बिहार में भी कहीं और नहीं मिलती। देखने में खुरमा बिल्कुल अनगढ़ की तरह दिखता है लेकिन अंदर से मिठास के साथ-साथ इतना रसीला होता है कि स्वाद जीभ से सीधा दिल में पहुँच जाता है। इस क्षेत्र के लोग अगर रिश्तेदार के घर जाते हैं तो इस मिठाई की डिमांड और बढ़ जाती है। मैंने भी ताज़ा तरीन गर्मागर्म खुरमा का स्वाद चखा। और जिस स्वर्गिक सुख का अनुभव किया उसका बखान करने के लिए शायद शब्द भी कम पर जाये। खुद उस मिठाईवाले के शब्द थे कि यह मिठाई दिखने में जितनी सुंदर लगती है, उतना ही स्वादिष्ट है इसका स्वाद। एक बार जिस भी व्यक्ति ने इस खुरमा चख लिए वो इसका स्वाद लेने दोबारा लौटकर जरूर आता है। बात में बहुत सच्चाई थी। हालांकि खुरमा का बाज़ार अन्य भारतीय मिठाइयों के मुकाबले थोड़ा सीमित है और इसमें मिलावट की गुंजाइश बहुत कम होती है, जिसके चलते खुरमा बनाने वालों को बहुत फायदा नहीं होता है। लेकिन कम मुनाफे के बावजूद कुछ मिठाईवाले अपनी इस पारंपरिक मिठाई को पीढ़ियों से बनाते आ रहे हैं।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अब थोड़ा हम भोजपुरी भाषा के बारे में बात करेंगे। खुद एक भोजपुरी भाषी होने के नाते मैंने गौर किया कि दुनिया की सबसे मीठी बोली है। यह एक ऐसी बोली है जो दुनिया के कई देशों में बोली जाती है। अपनी परिपक्व दृष्टि से बात करू तो पाया कि मैं जो भोजपुरी बोलता हूँ, और इस इलाके में जो भोजपुरी बोली जा रही है उसमें जमीं आसमान का अंतर है। एक शहरी परिवेश में घर में सीखी और बोले जाने वाली भोजपुरी में प्रवाह और सहजता नहीं है। शहरी क्षेत्र में जो बोली बोल रहे हैं उसमें हिंदी भाषा की भावभंगिमा और व्याकरणिक कसौटिया हावी है। वहां के लोग सहज ही आपको पकड़ लेंगे की भोजपुरी बोलते हुवे भी आप यहाँ नए है। एक अन्य बात जो मुझे सूझी कि भोजपुरी भाषा की सबसे बड़ी खासियत यह है कि जो इसे समझते हैं उनको तो मज़ा आता ही है, मगर जिसे समझ में नहीं आता है वो भी इसके मिठास से दूर नहीं रह पाते हैं।

एक दूसरा नज़ारा जो भोजपुर के सम्पूर्ण क्षेत्र में पसरा हुआ पाया वह है लोक गीतों की मधुर व्याप्ति। लोक संस्कृति समाज एवं किसी भी राष्ट्र की आत्मा होती है। लोक मस्तिक ने अपने इतिहास की कड़ियां, अपनी परंपरा, प्राचीन मूल्यों को अपने गीतों में, अपनी कथाओं में, जीवन के आनंद-उत्सवों में तथा नृत्य-नाटकों में जोड़ा है। ये मानव समाज के अनेक कार्यों के लिए वैदिक मंत्रों सा कार्य करते हैं। आज के पॉपुलर सिनेमा हो या शारदा सिन्हा के गीत, भोजपुर के तमाम स्थलों पर आप इसे सुन सकेंगे और गुनगुना सकेंगे। इस क्रम में पवन सिंह, खेसारी लाल, गुड्डू रंगीला के फ़िल्मी गानों से आप खासा परिचित होंगे। एक सुप्रसिद्ध गाना “तू लगावे लू जब लिपस्टिक, हिले ला आरा डिस्ट्रिक्ट” के वैश्विक लोकप्रियता से आज हम सब परिचित है ही। यहाँ के लोक गीत में सम्मोहन की प्रकृति है। एक और चीज जो मैंने गौर किया वह यह कि यहां की सांस्कृतिक गतिविधियों में और रीति-रिवाजों में भिखारी ठाकुर के साहित्यिक और लौकिक योगदान का काफी महत्व है। भोजपुर के शेक्सपियर जाने वाले भिखारी ठाकुर ने भोजपुर जीवन के तमाम रंगों को अपनी रचनाओं और नाटकों के माध्यम से व्यक्त किया है। इनकी साहित्यिक गूंज ही हम लोकगीतों फ़िल्मी गानों और रीति-रिवाजों में महसूस करते हैं।

इस बार के भोजपुरी यात्रा के दौरान मेरी रुचि वहां के इतिहास कुछ जानने और समझने की भी थी। सर्वप्रथम मेरी जिज्ञासा आरा नाम को लेकर थी। मेरी मुलाकात इस बार आरा के कई लोगों से हुई। इसमें कुछ बुजुर्ग, नवयुवक, शोधार्थी और व्यवसायी किस्म के लोग थे। यहाँ के इतिहास को लेकर कुछ मान्यता ये प्रचलित है। हालाँकि की मेरी जिज्ञासा यहाँ के नामकरण को लेकर ही थी। किन्तु इस क्रम में कई चीज़ें प्रकाश में आयी। मैंने पाया की यहाँ की इतिहास, परंपरा और मिथक काफी समृद्ध है। इसकी जड़ें कभी गहरी और सुदूर अतीत तक फैली हुई है। आरा के नामकरण संदर्भ में ये कहा जाता है कि यहां पहले काफी पहले आरण्य (जंगल) हुआ करते थे, जिसकी वजह से धीरे धीरे आरण्य से इस शहर का नाम आरा होता गया। वहीं आरा में मां आरण्य देवी का मंदिर भी है जिसके कारण ऐसी मान्यता है कि आरा का नाम उनके नाम पर रखा गया। खैर जो भी आरा के इस इतिहास को जानने के बाद वहां के लोग भी काफी प्रसन्नचित होते हैं। इसके नामकरण को लेकर एक दूसरी मान्यता भी प्रचलित है। यह घटना द्वापर युग की है। द्वापर युग में इस स्थान पर राजा मयूरध्वज राज्य करते थे। इन के शासनकाल में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन के साथ यहां आए थे। कृष्ण ने राजा के दान की परीक्षा लेते हुए अपने सिंह के भोजन के लिए राजा से उसके पुत्र के दाहिने अंग का मांस मांगा। जब राजा और रानी मांस के लिए अपने पुत्र को आरा (लकड़ी चीरने का औजार) से चलने लगे तो देवी प्रकट होकर उनको दर्शन दी थी। इस घटनाक्रम का संबंध भी इस स्थान के नामकरण से जुड़ा हुआ है। अतः कह सकते हैं कि यहां का इतिहास काफी समृद्ध है।

एक और रोचक चीज जिस पर मैं सभी लोगों के ध्यान को आकर्षित करना चाहूंगा कि भोजपुर प्रदेश में अक्सर आप किसी वाहन के पीछे ‘जय मां काली बखोरापुर वाली’ लिखा हुआ पाएंगे। तो आप के मन में ये सवाल उठता होगा की आखिर बखोरापुर कहाँ है तथा वहाँ स्थित मां काली का मंदिर कैसा है? तो आइये आप को परिचित कराते हैं बखोरापुर के भव्य काली मंदिर से। इस मंदिर को लेकर प्रचलित किंवदंती के अनुसार 1862 में बखोरापुर में भयंकर हैजा फैल गया था, जिसमें लगभग पांच सौ लोगों की इस महामारी कि चपेट में आकर मृत्यु हो गई। उसी समय गांव में एक साधु का प्रवेश हुआ, उन्होंने वहां मां काली के पिण्ड स्थापना करने की बात कही साथ ही कहा था कि ऐसा करने से यह बीमारी रुक जायेगी। बताया जाता है कि गांव के बड़े-बुजुर्गों ने सलाह-मशवरा के बाद नीम के पेड़ के पीछे मां काली के नौ पिण्ड की स्थापना कर



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पूजा-अर्चना शुरू कर दी। चंद दिनों बाद साधु अदृश्य हो गये, साथ ही हैजा गांव से धीरे-धीरे समाप्त हो गया। वो नीम का पेड़ अभी भी मंदिर परिसर में स्थित है। इस स्थान विशेष के लोगों की इस मंदिर को लेकर काफी आस्था देखने को मिलती है। यहाँ हर साल भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी नवरात्रा के आसपास होता है। मैं ऐसी कामना करूंगा कि जो भी आरा आए वह इस जगह पर जरूर आए। अंत में अपनी यात्रा के अनुभव को समाप्त करते हुए एक और बात पर ध्यान आकर्षित करूंगा की इस ग्रामीण इलाके में शहरी हस्तक्षेप के बावजूद कुछ प्राकृतिक सुषमा अभी भी बची हुई है। दूसरी बात जो गौर करने वाली है वह यह की आज भी यहां मानव और पशु के बीच सहृदयता, संवेदना और लगाव के दर्शन होते हैं। गाय, बैल, बकरी आदि के रूप में पाले पोसे जाने वाले प्राणियों को घर के सदस्य के रूप में देखरेख की जाती है। नहलाने, धोने, साफ सफाई भोजन पानी के रूप में इन पशुओं की जीवन क्रियाएं भी मानव जीवन के सदृश्य जुड़ी हुई है। जहां तक मेरी सोच है शहरों के बनिस्बत भारत के तमाम ग्रामीण इलाकों में ऐसा दृश्य देखने को जरूर मिलता है। यह सहसंबंध ही हमारी भारतीयता है। हम भारत के लोग किसानों संस्कृति के लोग हैं। हमारे मूल्य आज भी किसानों है। हम इससे जुदा नहीं हो सकते। आज शहरों में खत्म होती मानवीय मूल्य के पीछे एक कारण यह भी है कि हम अपने जड़ों से बिछड़ते जा रहे हैं।

अपनी यात्रा के अनुभव को समेटते हुए कहना चाहूंगा कि आरा (भोजपुर) कि मेरी यात्रा काफी ज्ञानप्रद, रोचक और प्रेरणादायी रही। ऐसी कामना करूंगा कि जब भी अवसर मिले आप यह गौरवशाली स्थान की यात्रा जरूर करें और यहां के इतिहास संस्कृति और मिथकों से लाभान्वित हो।





श्री कृष्ण की 16 कलाएं

बबन कुमार
वरि. अनुवादक/प्रशा.

श्री कृष्ण को जिन 16 कलाओं से परिपूर्ण कहा जाता है वह कलाएं कौन सी है, यह जानने की उत्कंठा सदा बनी रहती है। प्रभु श्री राम 14 कलाओं के ज्ञाता थे तो भगवान श्री कृष्ण सभी 16 कलाओं के ज्ञाता हैं। चंद्रमा की 16 कलाएं होती हैं और ब्रह्म यानि कि ईश्वर 16 कलाओं से युक्त होते हैं और फिर भगवान शिव जी 64 कला में पारंगत है और उन्हें 64 कलाओं का पूर्ण ज्ञान है।

सामान्यतः मनुष्य के पास 5 कलाएं होती हैं अगर उसे उनका ज्ञान और भान हो तो ठीक है। भगवान श्री कृष्ण 16 कलाओं से युक्त है। श्री कृष्ण जी में ही यह सारी खूबियां समाविष्ट थी। श्री कृष्ण जी 16 कलाओं को धारण करते थे उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। उनकी यह 16 कलाएं वो हैं जो हर किसी व्यक्ति में कम या ज्यादा होती हैं।

कला 1- श्री संपदा

श्री कला से संपन्न व्यक्ति के पास लक्ष्मी का स्थायी निवास होता है। ऐसा व्यक्ति आत्मिक रूप से धनवान होता है। ऐसे व्यक्ति के पास से कोई खाली हाथ वापस नहीं आता। इस कला से संपन्न व्यक्ति ऐश्वर्य पूर्ण जीवन यापन करता है।

कला 2- भू संपदा

जिस व्यक्ति के भीतर पृथ्वी पर राज करने की क्षमता हो तथा जो पृथ्वी के एक बड़े भू-भाग का स्वामी हो, वह व्यक्ति भू कला से संपन्न माना जाता है।

कला 3- कीर्ति संपदा

कीर्ति कला से संपन्न व्यक्ति का नाम पूरी दुनिया में आदर सम्मान के साथ लिया जाता है। ऐसे लोगों की विश्वसनीयता होती है और ऐसे लोग लोक कल्याण के कार्यों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

कला 4- वाणी सम्मोहन

वाणी में सम्मोहन भी एक कला है। इस कला से संपन्न व्यक्ति की वाणी सुनते ही सामने वाले का क्रोध शांत हो जाता है तथा मन में प्रेम और भक्ति की भावना भर जाती है।

कला 5- लीला

पांचवी कला का नाम है लीला। एक कला से संपन्न व्यक्ति के दर्शन मात्र से आनंद मिलता है और वह जीवन को ईश्वर के प्रसाद के रूप में ग्रहण करता है।

कला 6- कांति

जिसके रूप को देखकर मन अपने आप आकर्षित हो जाता है तथा जिसके मुख्य मंडल को बार-बार निहारने का मन करता है वह व्यक्ति इस कला में संपन्न होता है।

कला 7- विद्या

सातवीं कला का नाम विद्या है। इस कला से संपन्न व्यक्ति वेद, वेदांग के साथ ही युद्ध, संगीत कला, राजनीति एवं कूटनीति में भी सिद्धहस्त होते हैं।

कला 8- विमला

वैसे व्यक्ति जिसके मन में किसी प्रकार का छल कपट नहीं हो और जो सभी के प्रति समान व्यवहार रखता हो, वह विमला कला से संपन्न माना जाता है।

कला 9- उत्कर्षिणी शक्ति

इस कला से संपन्न व्यक्तियों में कर्म करने के लिए प्रेरित करने की क्षमता होती है। ऐसे व्यक्तियों में इतनी क्षमता होती है कि वह लोगों को किसी विशेष लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित कर सकता है।

कला 10- नीर-क्षीर विवेक

इस कला से संपन्न व्यक्ति में विवेक शीलता होती है। ऐसा व्यक्ति अपने विवेक से लोगों का मार्ग प्रशस्त कर सकने में सक्षम होता है।

कला 11- कर्मण्यता

इस कला से संपन्न व्यक्ति में कर्म करने की क्षमता तो होती है, साथ ही वह लोगों को भी कर्म करने की प्रेरणा दे सकता है तथा उन्हें सफल बना सकता है।

कला 12- योगशक्ति

इस कला से संबंध व्यक्ति में मन को वश में करने की क्षमता होती है। वह मन और आत्मा का फर्क मिटा योग की उच्च सीमा को प्राप्त कर लेता है।

कला 13- विनय

इस कला से संपन्न व्यक्ति में नम्रता होती है। ऐसे व्यक्ति को अहंकार छू भी नहीं पाता। वह सारी विद्याओं में पारंगत होते हुए भी गर्व हीन होता है।

कला 14- सत्य धारणा

इस कला से संपन्न व्यक्ति में कोमल-कठोर सभी तरह के सत्यों को धारण करने की क्षमता होती है। ऐसा व्यक्ति सत्यवादी होता है और जनहित तथा धर्म की रक्षा के लिए कटु सत्य बोलने से भी परहेज नहीं करता।

कला 15- आधिपत्य

इस कला से संपन्न व्यक्ति में अपना प्रभाव स्थापित करने का गुण होता है। जरूरत पड़ने पर वह लोगों को अपने प्रभाव की अनुभूति कराने में सफल होता है।

कला 16- अनुग्रह क्षमता

इस कला से संपन्न व्यक्ति में किसी का कल्याण करने की प्रवृत्ति होती है। वह प्रत्युपकार की भावना से संचालित होता है। ऐसे व्यक्ति के पास जो भी व्यक्ति सहायता या मदद के लिए आता है, उसे वह अपनी क्षमता के अनुसार सहायता करता है।





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



टोक्यो ओलंपिक: भारत ने इतिहास रचा

संजय कुमार बोस

सहायक पर्यवेक्षक/

रिपोर्ट अनुभाग

(दैनिक विश्वमित्र से चयनित)

भारत के लिए टोक्यो ओलंपिक अब तक का सबसे सफल ओलंपिक रहा। भारत ने ओलंपिक के पहले ही दिन मेडल जीता था। वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने इस अभियान की शुरुआत सिल्वर मेडल जीतकर की थी। उन्होंने 49 किलोग्राम वेट कैटेगरी में टोटल 202 किलो वजन उठाकर सिल्वर जीता। इस तरह देश को वेटलिफ्टिंग में 21 साल बाद ओलंपिक मेडल मिला। 2017 में 49 किलो वेट कैटेगरी में मीरा ने 194 किलोग्राम वजन उठाकर लिफ्टिंग चैंपियनशिप में गोल्ड जीता था। मीराबाई वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप में मेडल जीतने वाली पहली भारतीय वेटलिफ्टर हैं।

भारत की स्टार बैडमिंटन प्लेयर पीवी सिंधु ने इतिहास रच दिया। वे ओलंपिक में लगातार दो मेडल जीतने वाली भारत की पहली महिला खिलाड़ी बन गईं। सिंधु ने ब्रॉन्ज मेडल मैच में चीन की जियाउद्दीन ही को केवल 52 मिनट में 21-13 21-15 से हराया। सिंधु ने इससे पहले 2016 रियो ओलंपिक में सिल्वर मेडल जीता था। सिंधु ने वर्ल्ड बैडमिंटन चैंपियनशिप में गोल्ड सहित 5 मेडल जीते हैं। वे कॉमनवेल्थ गेम्स में भी एक गोल्ड सहित तीन मेडल जीत चुकी हैं।

भारत की बॉक्सर लवलीना बोरगोहेन 69 किलोग्राम वेट कैटेगरी में ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। लवलीना ओलंपिक में बॉक्सिंग में भारत को मेडल दिलाने वाली भारत की ओवरऑल तीसरी और महिलाओं में दूसरी बॉक्सर है। इससे पहले विजेंदर सिंह (2008) और मैरी कॉम (2012) में मेडल जीत चुके हैं। लवलीना 2018 और 2019 में हुए वर्ल्ड बॉक्सिंग चैंपियनशिप में ब्रॉन्ज मेडल जीत चुकी है। साथ ही वे 2017 में एशियन बॉक्सिंग चैंपियनशिप में भी ब्रॉन्ज मेडल जीत चुकी है।

भारतीय हॉकी टीम ने 41 साल के सूखे को खत्म करते हुए भारत को हॉकी मैच में ब्रॉन्ज मेडल दिलाया। टीम इंडिया ने ब्रॉन्ज मेडल मैच में जर्मनी को 5-4 से हराया। ओलंपिक में भारत की हॉकी टीम को आखिरी पदक 1980 में मॉस्को में मिला था। तब वासुदेवन भास्करन की कप्तानी में टीम ने गोल्ड जीता था।

रवि दहिया ने 57 किलोग्राम वेट कैटेगरी में भारत को सिल्वर मेडल दिलाया। वह फाइनल में रूसी पहलवान युगुएव के हाथों हार गए। रवि 2019 में नूरसुल्तान में हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप के ब्रॉन्ज मेडलिस्ट रहे हैं। इसके अलावा उन्होंने 2015 में वर्ल्ड जूनियर रेसलिंग चैंपियनशिप में सिल्वर मेडल जीता था। सात साल की उम्र में अखाड़े में कदम रखने वाले बजरंग पुनिया ने ओलंपिक में ब्रॉन्ज मेडल जीता। उन्होंने तीसरे स्थान के लिए हुए मुकाबले में कजाकिस्तान की दौलत नियाजबेकोव को 8-0 से हराया। बजरंग वर्ल्ड Under-23 चैंपियनशिप, कॉमनवेल्थ गेम्स, एशियन गेम्स, एशियन चैंपियनशिप और वर्ल्ड चैंपियनशिप में भी मेडल जीत चुके हैं। उन्हें अर्जुन पुरस्कार और खेल रत्न से सम्मानित किया जा चुका है। बजरंग ने सीनियर लेवल पर अपना पहला वर्ल्ड चैंपियनशिप मेडल 2013 में 60 किलोग्राम वेट कैटेगरी में जीता था। बजरंग एशियन कुश्ती चैंपियनशिप में सात मेडल जीत चुके हैं। बजरंग दो बार एशियन गेम्स में मेडल हासिल कर चुके हैं।

नीरज चोपड़ा टोक्यो ओलंपिक में एथलेटिक्स में देश के लिए मेडल जीतने वाले पहले एथलीट बन गए। उन्होंने फाइनल में 87.58 मीटर जेवलिन थ्रो कर गोल्ड मेडल जीता। यह उनका पहला ही ओलंपिक था।





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

चुप क्यों हो ?

कौसल किशोर यादव
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

घटा है घनघोर
तमस चहुँ ओर
दलितों का है शोर
पापो की है होड़
दीनों पर प्रहार
कुत्सित - व्यवहार
अबला - चीत्कार
मचा है हाहाकार
ओ धरती; तुम चुप क्यों हो ?

कहा है भीष्म प्रण
कहा है गुरु द्रोण
दम्भ द्वेष का रण
रक्त रंजीत है कण
पाप सर्प की फुफकार
दिखे गिद्ध और सियार
चूसे दुखियों का हाड़
लो नृसिंह अवतार
उदर असुरों का फार
ओ गंगा; तुम चुप क्यों हो ?

जाति धर्म का है युद्ध
रोये राम रहीम बुद्ध
मंदिर मस्जिद नहीं शुद्ध
कहा मानव प्रबुद्ध
ऋषि वाणी निस्तेज
धरा कम्पित चीत्कार
होम मंत्र विकार
गंगा त्याग अपनी धारा
अग्नि पूज बना तारा
त्राहि करता जग सारा
ओ अम्बर; तुम चुप क्यों हो ?



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



गलतफहमी का शिकार

विमल

गलतफहमी का शिकार ये दुनिया है
सिर्फ एक कान में आग लगती है
हजारों कानों में चिंगारियां फुटती है
पूरी दुनिया में धुआं धुआं फैल जाता है
इसकी औकात इतनी होती है कि
इसका चरित्र कोई नहीं पकड़ पाता है
नचाता कुदता पूरे विश्व में
गलतफहमी फैलाता है
पूरा जमाना शिकार हो जाता है
गलतफहमी सिर्फ कलयुग से ही नहीं खेला है
ये त्रेता द्वापर सत्य युग को भी रेला है
सभी गलतफहमी में ही तो जीते हैं
तभी तो इतनी अफवाहें फैलती है
गलतफहमी का शिकार हम मानव ही नहीं
इस सृष्टि की कण-कण से होकर गुजरती है
जल थल वायु में रहने वाले जीवों से भी खेलती है
गलतफहमी का शिकार एक छोटी सी
गुलाब का फूल भी होती है
तभी तो रक्षक बनकर कांटा जरी होती है
काश कांटा ना होता गुलाब के फूल
गलतफहमी में फंसकर
एक दूसरे की पंखुड़ियां झार कर
पराग मसलने में जुड़ जाते
कांटा रक्षक बनकर कांटे कांटे से काट देता है
तभी तो गुलाब के फूल खिला हुआ होता है
गलतफहमी निर्जीव वस्तुओं को भी नहीं छोड़ा
हरे पत्ते भी जाकर जल में जल पड़ा है
समुद्र का जल आकर गढ़े नाले में भी खड़ा है
समुद्र को तुम छोड़
समुद्र का विकराल रूप है
समुद्र में जल आपस में उलझते रहेंगे हीं
गलतफहमी तो होती ही रहेगी

एक दूसरे से टकराते
गलतफहमी में तूफान ला देते हैं
एक छोटी सी नदी को भी देख
गलतफहमी का शिकार से
अपना रूठ बदल देती है
दो गांव दो नगर को जोड़ने वाली
सेतु को भी बहाती है
साथ-साथ घर गांव को भी बहा ले जाती है
ये गलतफहमी नहीं तो क्या है
गलतफहमी तो बरसात बढ़ाता है
नदी बादल को छोड़कर
घर गांव को बहाती है।





मैं मोबाइल हूं

कौशल किशोर यादव

मैं मोबाइल हूं
टेक्नोलॉजी ने मुझे बनाया है।
अब चाह कर भी तुम मुझे खत्म नहीं कर सकते
आखिर दीवाना जो मैंने तुम्हें बनाया है।

लोगों के दिलों पर मैंने राज किया है
मेरे बिना तुम अधूरे हो
यह मैंने विश्वास दिलाया है।
अब दूर नहीं रह सकता कोई मुझसे
मैं काम करता हूं ऐसे।

बिन मेरे अब इंसान रह नहीं सकता
कुछ पल भी अब बता नहीं सकता।
दिन रात पड़े रहते हो जो मेरे अंदर
रोशनी उनकी मैं छीन लेता।

अच्छी फोटो खींचता है
वीडियो भी खूब बनाता।
फिर हर किसी का अपना
डाटा चुराने में कोई कसर नहीं छोड़ता।
अच्छाइयां कूट-कूट कर भरी
बुराइयां भी नहीं कोई कमी
उपयोग में रख कर के
जिंदगी सवार भी सकती है।

शाम सुबह मुझे फ्यूल चाहिए
हां मुझे बनाया ही ऐसा गया है
चाह कर भी पीछा नहीं छोड़ा जा सकता।

मैं मोबाइल हूं टेक्नोलॉजी ने मुझे बनाया है
अब चाह कर भी मुझे तुम खत्म नहीं कर सकते
आखिर दीवाना जो बना दिया मैंने तुम्हें ऐसे
मैं तुम्हारा अपना मोबाइल हूं मोबाइल हूं।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

जिंदगी का पड़ाव

नूपुर साव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
प्रशासन विभाग

जब तक चलेगी जिंदगी की राहें
कहीं प्यार कहीं टकराव मिलेगा ।
कहीं बनेंगे संबंध हृदय से तो
कहीं आत्मीयता का अभाव मिलेगा ।
कहीं मिलेगी जिंदगी में खुशियां तो
कहीं दुखों का भाव मिलेगा ।
कहीं मिलेगी सच्चे मन से प्रेम तो
कहीं घृणा का जाल मिलेगा ।
कहीं बनेंगे पर आए रिश्ते भी अपने तो
कहीं अपनों से ही तनाव मिलेगा ।
कहीं होगी सफलताओं की लड़ियां तो
कहीं असफलताओं का हार मिलेगा ।
तू चला चल रही अपने कर्म पथ पर
जैसे तेरा भाव वैसा प्रभाव मिलेगा ।
रक्षा भाव में शुद्धता का स्पर्श तू
अवश्य जिंदगी का पड़ाव मिलेगा,
अवश्य जिंदगी का पड़ाव मिलेगा ।





पिप्पलाद कथा

नरेन्द्र कुमार
स.ल.पे.अ.प्रशासन

श्मशान में जब महर्षि दधीचि के मांसपिंड का दाह संस्कार हो रहा था। उनकी पत्नी अपने पति का वियोग सहन नहीं कर पायीं और पास में ही स्थित विशाल पीपल वृक्ष के कोटर में 3 वर्ष के बालक को रख स्वयं चिता में बैठकर सती हो गयीं। इस प्रकार महर्षि दधीचि और उनकी पत्नी का बलिदान हो गया किन्तु पीपल के कोटर में रखा बालक भूख प्यास से तड़प तड़प कर चिल्लाने लगा। जब कोई वस्तु नहीं मिली तो कोटर में गिरे पीपल के गोदों (फल) को खाकर बड़ा होने लगा। कालान्तर में पीपल के पत्तों और फलों को खाकर बालक का जीवन येन केन प्रकारेण सुरक्षित रहा।

एक दिन देवर्षि नारद वहाँ से गुजरे। नारद ने पीपल के कोटर में बालक को देखकर उसका परिचय पूँछा...

नारद- बालक तुम कौन हो ?

बालक- यही तो मैं भी जानना चाहता हूँ।

नारद- तुम्हारे जनक कौन हैं ?

बालक- यही तो मैं जानना चाहता हूँ।

तब नारद जी ने ध्यान धर देखा। नारद ने आश्चर्यचकित हो कर बताया कि हे बालक ! तुम महान दानी महर्षि दधीचि के पुत्र हो। तुम्हारे पिता की अस्थियों का वज्र बनाकर ही देवताओं ने असुरों पर विजय पायी थी। नारद ने बताया कि तुम्हारे पिता दधीचि की मृत्यु मात्र 31 वर्ष की वय में ही हो गयी थी।

बालक- मेरे पिता की अकाल मृत्यु का कारण क्या था ?

नारद- तुम्हारे पिता पर शनिदेव की महादशा थी।

बालक- मेरे ऊपर आयी विपत्ति का कारण क्या था ?

नारद- शनिदेव की महादशा।

इतना बताकर देवर्षि नारद ने पीपल के पत्तों और गोदों को खाकर जीने वाले बालक का नाम पिप्पलाद रखा और उसे दीक्षित किया।

नारद के जाने के बाद बालक पिप्पलाद ने नारद के बताए अनुसार ब्रह्मा जी की घोर तपस्या कर उन्हें प्रसन्न किया।



ब्रह्मा जी ने जब बालक पिप्पलाद से वर मांगने को कहा तो पिप्पलाद ने अपनी दृष्टि मात्र से किसी भी वस्तु को जलाने की शक्ति माँगी। ब्रह्मा जी से वर मिलने पर सर्वप्रथम पिप्पलाद ने शनि देव का आह्वाहन कर अपने सम्मुख प्रस्तुत किया और सामने पाकर आँखें खोलकर भष्म करना शुरू कर दिया। शनिदेव सशरीर जलने लगे। ब्रह्मांड में कोलाहल मच गया। सूर्यपुत्र शनि की रक्षा में सारे देव विफल हो गए। सूर्य भी अपनी आँखों के सामने अपने पुत्र को जलता हुआ देखकर ब्रह्मा जी से बचाने हेतु विनय करने लगे। अन्ततः ब्रह्मा जी स्वयं पिप्पलाद के सम्मुख पधारे और शनिदेव को छोड़ने की बात कही किन्तु पिप्पलाद तैयार नहीं हुए। ब्रह्मा जी ने एक के बदले दो वर मांगने की बात कही। तब पिप्पलाद ने खुश होकर निम्नवत दो वरदान मांगे...

1- जन्म से 5 वर्ष तक किसी भी बालक की कुंडली में शनि का स्थान नहीं होगा। जिससे कोई और बालक मेरे जैसा अनाथ न हो।

2- मुझ अनाथ को शरण पीपल वृक्ष ने दी है। अतः जो भी व्यक्ति सूर्योदय के पूर्व पीपल वृक्ष पर जल चढ़ाएगा उसपर शनि की महादशा का असर नहीं होगा।

ब्रह्मा जी ने तथास्तु कह वरदान दिया। तब पिप्पलाद ने जलते हुए शनि को अपने ब्रह्मदण्ड से उनके पैरों पर आघात करके उन्हें मुक्त कर दिया। जिससे शनिदेव के पैर क्षतिग्रस्त हो गए और वे पहले जैसी तेजी से चलने लायक नहीं रहे। अतः तभी से शनि 'शनैःचरति यः शनैश्चरः' अर्थात् जो धीरे चलता है वही शनैश्चर है, कहलाये और शनि आग में जलने के कारण काली काया वाले अंग भंग रूप में हो गए।

सम्प्रति शनि की काली मूर्ति और पीपल वृक्ष की पूजा का यही धार्मिक हेतु है। आगे चलकर पिप्पलाद ने प्रश्न उपनिषद् की रचना की, जो आज भी ज्ञान का वृहद भंडार है.....!!





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नयन रंजन पाल, स.ले.प.अ



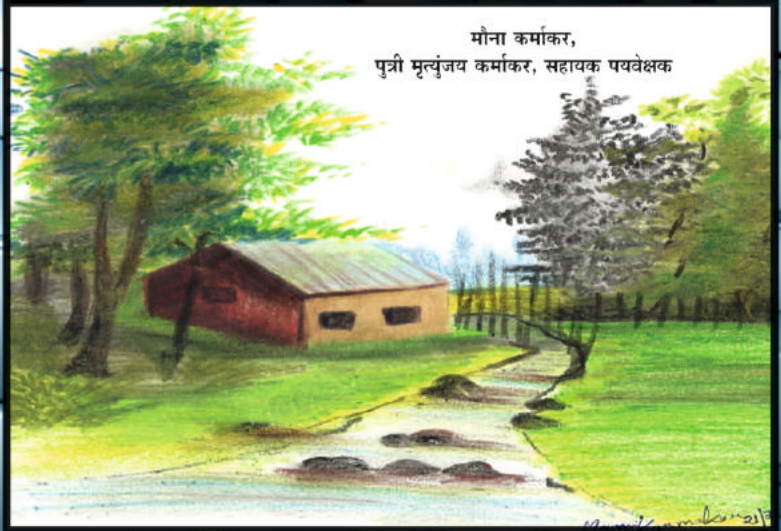
मौना कर्माकर,
पुत्री मृत्युंजय कर्माकर, सहायक पयवेक्षक



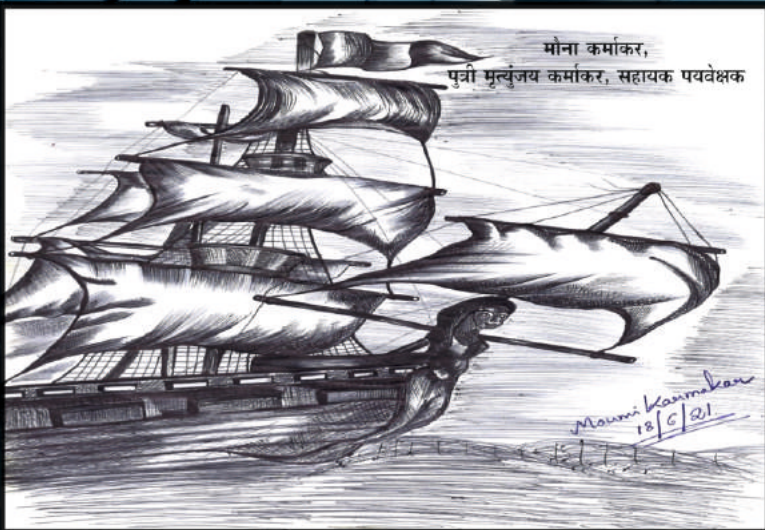
सौराश्री शासमल,
पुत्री सुशांत शासमल, स.ले.प.अ



मौना कर्माकर,
पुत्री मृत्युंजय कर्माकर, सहायक पयवेक्षक



मौना कर्माकर,
पुत्री मृत्युंजय कर्माकर, सहायक पयवेक्षक



सौराश्री शासमल,
पुत्री सुशांत शासमल, स.ले.प.अ





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



पत्रिका विमोचन के शुभअवसर पर महानिदेशक महोदया सुपर्णा देब,
निदेशक महोदया तान्या सिंह एवं निदेशक अजय कुमार



पत्रिका विमोचन के शुभअवसर पर 'अनुभूति परिवार'